

# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1  
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 235]  
No. 235]

नई दिल्ली, मंगलवार, अक्टूबर 20, 1998/आश्विन 28, 1920  
NEW DELHI, TUESDAY, OCTOBER 20, 1998/ASVINA 28, 1920

वाणिज्य मंत्रालय

अधिसूचना

(प्रारंभिक निष्कर्ष)

नई दिल्ली, 20 अक्टूबर, 1998

विषय : चीन जनवादी गणराज्य से साइट्रिक एसिड के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच-प्रारंभिक निष्कर्ष।

29/1/97-ए डी डी :—1995 में यथा संशोधित सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा सीमा शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आंकलन तथा संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए :

क. क्रियाविधि

1. जांच के संबंध में अधोलिखित क्रियाविधि का पालन किया गया है :—

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके पश्चात् प्राधिकारी भी कहा जाएगा) को उपर्युक्त नियमावली के तहत सीटरजिया, बायो-कैमिकल्स लि०, नैवराइट हाउस, जे० एन० हरदिया मार्ग, गैलार्ड एस्टेट, बम्बई (जिसे इसके बाद सीटरजिया कहा जाएगा) से घरेलू उद्योग की ओर से एक लिखित आवेदन प्राप्त हुआ था जिसमें चीन जनवादी गणराज्य मूल के या वहां से निर्यात किए गए साइट्रिक एसिड के पाटन का आरोप लगाया गया था;
- (ii) याचिकाकर्ता द्वारा दिए गए आवेदन की प्रारंभिक जांच से कुछेक कमियां उजागर हुई थीं जिन्हें बाद में याचिकाकर्ता द्वारा सुधार दिया गया था। अतः याचिका के संबंध में यह समझ लिया गया था कि उसके साथ समुचित दस्तावेज संलग्न किए गए हैं;
- (iii) प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर चीन से साइट्रिक एसिड के आयातों के विरुद्ध जांच शुरू करने का निर्णय लिया। प्राधिकारी ने उक्त नियमों के उप नियम 5(5) के अनुसार जांच की कार्यवाही शुरू करने से पहले पाटन के आरोप की प्राप्ति के विषय में चीन के दूतावास को सूचित कर दिया था;
- (iv) प्राधिकारी ने दिनांक 18 मार्च, 1998 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण, में प्रकाशित किया गया जिसके द्वारा चीन (इसके बाद इसे सम्बद्ध देश कहा जाएगा) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित साइट्रिक एसिड, जो सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की अनुसूची-1 के सीमा शुल्क शीर्ष 2918.14 के तहत वर्गीकृत है, के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच शुरू की गई थी;
- (v) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों (जिनके ब्यौरे याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराये गए थे) और उद्योग संगठनों को भेजी और नियम 6(2) के अनुसार उन्हें लिखित रूप में अपने पिचार प्रस्तुत करने का अवसर दिया;
- (vi) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति भारत में साइट्रिक एसिड के सभी ज्ञात आयातकों (जिनके ब्यौरे याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध

कराये गए थे) को भेजी और उन्हें मलाह दी कि वे पत्र की तारीख के चालीस दिनों के भीतर लिखित रूप में अपने विचारों से अवगत कराएं;

- (vii) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सी बी ई सी) से भी अनुरोध किया गया कि वह जांच अर्वाध सहित पिछले 3 वर्षों के दौरान भारत में किए गए साइट्रिक एसिड के आयातों के व्यौर प्रस्तुत करने की व्यवस्था करें। लेकिन, सी बी ई सी से कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई थी;
- (viii) प्राधिकारी ने उक्त नियम 6(3) के अनुसार याचिका की एक प्रति संबद्ध देश के जात निर्यातकों तथा दूतावास को उपलब्ध की। याचिका की एक प्रति अनुरोध करने पर अन्य हितबद्ध पार्टियों को भी उपलब्ध कराई गई थी;
- (ix) प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसार संगत सूचना प्रस्तुत करने के लिए निम्नलिखित जात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी :
1. चाइना सांझी प्रोमपरस कैम इंड ग्रुप लि०, 294, जीफेंग रोड, यूचेंग मिटी, शांक्सी प्रोविन्स, चीन।
  2. चौक्विंग डैक्मीन फार्मा कं० लि०, चुनांगजाओं रोड, डॉजियांन टाऊन, बी बी डिस्ट्रिक्ट चीन।
  3. लियान्युगांग कैम., मैडिमिंग एंड हैल्थ प्रोफ, 40, हैलियन ईस्ट रोड, लियानयुगांग, जियांगशू, चीन।
  4. नानतांग, साइट्रिक एसिड फैक्ट्री, 30 हेंगी रोड, नानतांग, जियांगशू, चीन।
  5. नं. 404 फैक्ट्री ऑफ चाइना न्यूक्लियर इण्डस्ट्री जन. कार्पोरेशन, पी.ओ. बाक्स 508-ए 22, लानझाऊ मिटी, गैशू प्रोविन्स चीन।
  6. शांक्सी इंटरनेशनल कांऊटर ट्रेड कोर्पोरेशन, 110, नार्थ सोयनन रोड, तायुआन, शांझी, चीन।
  7. झेंग झाऊ वाइवन कं० लि०, नं. 2 नैनयेंग रोड, झेंगझाऊ 450053, चीन।
  8. जिबो हुआलौंग इंडस्ट्रियल जनरल कार्पोरेशन, मैनाजी बिलेज जिचुआने डिस्ट्रिक्ट, जिबो शेनडौंग, चीन
- किमी भी निर्यातक ने प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया।
- (x) संबद्ध देश के नई दिल्ली स्थित दूतावास को नियम 6(2) के अनुसार जांच शुरू करने के संबंध में इस अनुबंध के साथ सूचित किया गया था कि वह अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का निर्धारित समय के अन्दर उत्तर देने की मलाह दें। निर्यातकों को भेजे गए पत्र, याचिका और प्रश्नावली की एक प्रति जात निर्यातक/उत्पादनकर्ताओं की सूची सहित दूतावास को भी भेजी गयी थी।
- (xi) नियम 6(4) के अनुसार साइट्रिक एसिड के निम्नलिखित जात आयातकों को आवश्यक सूचना के लिए प्रश्नावली भेजी गई थी :—
- (1) गाविंदराम चैल्लाराम गौमुख बिल्डिंग युसुफ मेहरा अली रोड, मस्जिद स्टेशन के समाने, मुम्बई-400003।
  - (2) सी.जे.शाह एंड कं. महावीर चैम्बर्स, सैमुअल स्ट्रीट, मुम्बई-400003।
  - (3) रमणीकलाल गोसालिया, पावर्स चैम्बर्स, दूसरी मंजिल, इमाजी स्ट्रीट, मुम्बई-400023
  - (4) एच एम जी इंड लि०, हरी चैम्बर्स, एम भगतसिंह रोड-2, मुम्बई-400023
  - (5) अमीजल कैमिकल्स, 313/5 जी आई डी सी, अंकलेश्वर, गुजरात।
  - (6) आइरिश लैबोरेटरीज (इण्डिया), प्लाट, नं. 379, फेज-II, जी आई डी सी वाटवा, अहमदाबाद 382245
  - (7) गायत्री लैब्स प्रा० लि०, ई-64, रोड सं. 7, एम आई डी सी, तारापुर, ब्याप्सर थाणे जिला-401502।
- मैसर्स आइरिश लैबोरेटरीज (इण्डिया) अहमदाबाद द्वारा प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया गया था।
- (xii) क्षति के संबंध में याचिकाकर्ताओं से अतिरिक्त सूचना मांगी गई थी जिसे, भी प्रस्तुत कर दिया गया था;
- (xiii) प्राधिकारी ने, जहां तक जरूरी समझा, याचिकाकर्ता के परिसरों में मौके पर जांच की;
- (xiv) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्य के अगोपनीय रूपान्तर है को प्राधिकारी द्वारा रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया और हितबद्ध पक्षों द्वारा जांच के लिए खुला रखा।
- (xv) सामान्य रूप से स्वीकार्य लेखा सिद्धान्तों (जीएपी) एवं याचिकाकर्ताओं द्वारा दी गई सूचना के आधार पर भी उत्पादन की इस्तरत लागत और भारत में संबद्ध वस्तुओं को बनाने और बेचने की लागत का निर्धारण करने के लिए लागत जांच भी की गई जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि क्या घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पाटन मार्जिन से कम पाटन-रोधी शुल्क पर्याप्त होगा;
- (xvi) \*\*\* इस अधिसूचना में गोपनीयता के आधार पर किसी हितबद्ध पार्टी द्वारा दी गई सूचना प्रदर्शित होती है और इसलिए इस पर प्राधिकारी ने नियमों के अन्तर्गत विचार किया ;
- (xvii) जांच 1 अप्रैल, 1996 से 31 जुलाई, 1997 की अवधि के लिए की गई थी।

#### ख. याचिकाकर्ता के विचार

2. याचिकाकर्ता ने अपनी याचिका और तदुपरांत प्रस्तुत की गई जानकारी में निम्नलिखित प्रमुख मुद्दे उठाए हैं :—

- (i) याचिकाकर्ता यह दावा करता है कि वे भारत में शीरा से साइट्रिक अम्ल बनाने वाले एकमात्र विनिर्माता हैं। उनका उत्पाद अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता का है और उसे उपभोक्ताओं द्वारा भलीभांति स्वीकार किया जाता है।

- (ii) सीमाशुल्क में कमी होने से चीनी विनिर्माता अपनी कीमतों में कमी कर रहे हैं और घरेलू बाजार को माल से भर रहे हैं। इसके कारण याचिकाकर्ता को अपनी बिक्री कीमतों को कम करना पड़ा है और वे अपनी उत्पादन लागत प्राप्त करने में असमर्थ हैं। चीन के उत्पाद के पाटन से साइट्रिक अम्ल की पहली में कम बिक्री हो रही है, स्टॉक इकट्ठा हो रहा है और हाजिरी हो रही है। आगे यह कहा गया है कि अगर यह स्थिति जारी रहती है तो उन्हें मजबूर होकर अपना उत्पादन बंद करना पड़ेगा।
- (iii) चीनी उत्पादकों ने जांचोसर अवधि में अपने उत्पाद की कीमत में और गिरावट की है और इस प्रकार भारत में घरेलू कीमत को और कम करने के लिए मजबूर कर रहे हैं। याचिकाकर्ता ने आगे कहा है कि वे इतनी कम कीमतों में प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते। आयात की मात्रा बढ़ रही है और अप्रैल 1997 जुलाई 1997 में यह देश में मांग की करीब 60 प्रतिशत है।

#### ग. आयातकों, निर्यातकों और अन्य इच्छुक पक्षों के विचार

3. निर्यातकों, आयातकों और अन्य इच्छुक पक्षों के विचार संक्षिप्त रूप से निम्नानुसार हैं :—

- (i) याचिका में बताए गए किसी भी निर्यातक ने उत्तर नहीं दिया है और इस तरह जांच में सहयोग नहीं किया है।
- (ii) संदर्भाधीन माल के आयातक मैसर्स आइरिश लेबोरेट्रीज ( इंडिया ), अहमदाबाद ने उत्तर दिया है और उनके विचार निम्नानुसार हैं :—
- क. याचिकाकर्ता द्वारा दायर यह विवरण कि वे करीब 95 प्रतिशत उत्पादन करते हैं ; पूर्णतया गलत और आधारहीन है। अन्य विनिर्माता मैसर्स भारत स्टार्च इण्डस्ट्रीज लिमिटेड, बिष्टुमान है जिसकी वार्षिक क्षमता 20000 मी. टन है।
- ख. याचिकाकर्ता का यह दावा सही नहीं है उनके उत्पाद और आयातित उत्पाद का एक दूसरे के बदले उपयोग हो सकता है। चीन से आयातित साइट्रिक अम्ल मानदण्डों के अनुसार पारदर्शी और समरूप है, जबकि याचिकाकर्ता का उत्पाद मानक स्तर से कम प्रतिशतता वाला, मलिन तथा फेंकने वाला है तथा मानदण्डों के अनुसार नहीं है। इसके एक बैच में ही अन्तर आ जाता है।
- ग. याचिकाकर्ता के लिए सामान्य मूल्य प्राप्त करना सम्भव होना चाहिए था क्योंकि उनका संयंत्र करीब 20 वर्ष पुराना है और पहले भी उनका एक विश्व विख्यात कंपनी के साथ सहयोग था। याचिकाकर्ता ने काफी लाभ कमाया था और उन्हें लगातार अनुसंधान और विकास प्रयासों के द्वारा उत्पादन लागत में कमी करनी चाहिए थी।
- घ. जिस निर्यात कीमत की पेशकश की गई और साइट्रिक अम्ल के अन्य उत्पादक मैसर्स भारत स्टार्च द्वारा उत्पादित साइट्रिक अम्ल की कीमत याचिकाकर्ता द्वारा की गई पेशकश से कम है। भारत में निर्यात कीमत हमेशा ही पिछले कुछ वर्षों में लगातार सामान्य कीमत के बराबर रही है और उसमें कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं है।
- ङ. घरेलू उद्योग का यह दावा कि उन्हें वास्तविक क्षति हुई है, उचित और सही नहीं है। जब कोई आयात नहीं था तब घरेलू उद्योग काफी ज्यादा कीमतों पर बिक्री कर रहा था।
- च. याचिकाकर्ता ने अपनी कीमत को हमेशा आयात की कीमत के बराबर पर पहुंचाया है तथा हर संभावना पर उन्होंने अपनी कीमतें बढ़ाई हैं और वह भी बिना किसी पूर्व सूचना के तथा बकाया आदेशों पर भी।
- छ. अगर आयात नहीं हुआ होता तब उत्पादों की पूर्ण रूप से अनुपलब्धता हो गई होती क्योंकि मांग को पूरा करने के लिए याचिकाकर्ता के पास पर्याप्त उत्पादन नहीं है।

इन वर्षों के दौरान याचिकाकर्ताओं ने अपनी उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के बारे में, संयंत्र को सर्वाधिक प्रभावी ढंग से चलाने, कोई अनुसंधान या विकासात्मक कार्य करने की बात कभी नहीं सोची तथा आयात को रोकने और अपनी कीमत प्राप्त करने के बदले अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर घरेलू बाजार में माल की आपूर्ति करने के बारे में कभी नहीं सोचा।

#### घ. उठाए गए मुद्दों की जांच

4. निर्यातक, आयातक, याचिकाकर्ता और अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किए गए विवरण पर विचार किया गया और इस अधिसूचना में उपयुक्त स्थानों पर उन पर चर्चा की गई है।

#### ङ. विचाराधीन उत्पाद

5. इस याचिका में शामिल उत्पाद चीन के उद्गम वाला या वहाँ से निर्यात किया गया साइट्रिक अम्ल है। यह उत्पाद सीमाशुल्क टैरिफ के शीप 2918.14 में वर्गीकृत है। किन्तु यह वर्गीकृत केवल सांकेतिक है और इस जांच में किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है। याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि आयात नीति के अनुसार यह उत्पाद ओ.जी.एल. श्रेणी में आता है और उसका मुख्य रूप से खाद्य, साफ्ट ड्रिंक, मुरब्बे, दवाइयों में परीक्षक के रूप में, वस्त्र उद्योग इत्यादि में उपयोग होता है तथा ब्यापलर को साफ करने जैसे और भी औद्योगिक उपयोग हैं। सभी साइट्रिक अम्ल मोनो कार्बोक्सिल अम्ल है और आम्लीकरण, परीक्षकों, प्रतिरोधक एजेंट तथा अलग करने वाले एजेंट के एक ही सामान्य उद्देश्य को पूरा करते हैं। साइट्रिक अम्ल का सामान्यतः दवा के रूप में उत्पादन होता है।

#### च. सामान वस्तु

6. याचिकाकर्ता ने दावा किया है घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित साइट्रिक अम्ल और चीन द्वारा पाटित साइट्रिक अम्ल का उपयोग एक दूसरे के बदले किया जाता है लेकिन याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित साइट्रिक अम्ल और चीनी निर्यातक द्वारा विनिर्मित साइट्रिक अम्ल में अलग-अलग कच्चे माल का उपयोग होता है। लेकिन प्रक्रिया एक ही है अर्थात् किण्वन (फर्मेंटेशन) है, उपकरण एक ही है और इनमें किसी विशेष या अलग प्रक्रिया की जरूरत नहीं होती है। यह देखा गया है कि याचिकाकर्ता शीरे से साइट्रिक अम्ल का उत्पादन कर रहा है जबकि चीन वाले मीठे आलू के स्टार्च का उपयोग साइट्रिक अम्ल के

उत्पादन हेतु कच्चे माल के रूप में कर रहे हैं। यह भी कहा जाता है कि साइट्रिक एसिड का उत्पादन कैल्शियम साइट्रिक बेस से भी किया जा सकता है।

याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि उनके द्वारा विनिर्मित साइट्रिक एसिड और चीनी निर्यातकों द्वारा विनिर्मित साइट्रिक एसिड समान मानदण्डों को पूरा करता है और इनमें ब्रिटिश फार्मकोपिया विनिर्देशन का अनुपालन किया जाता है और इनका उपयोग एक दूसरे के स्थान पर किया जा सकता है। उन्होंने इस बारे में एक विशेषज्ञ से एक प्रमाण-पत्र प्रस्तुत किया है जिसने यह विचार व्यक्त किया है कि दोनों सामग्री में फार्मकोपिया विनिर्देशन का पूर्ण रूप से अनुपालन किया जाता है और इनका उपयोग औषधि और खाद्य उत्पाद तैयार करने में अथवा उपभोक्ताओं को अपेक्षित किसी उद्देश्य के लिए एक दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया जा सकता है। याचिकाकर्ता ने एक प्रयोगशाला से विश्लेषण रिपोर्ट भी प्रस्तुत की है जिसमें यह पुष्टि की गयी है कि याचिकाकर्ता द्वारा विनिर्मित साइट्रिक एसिड और चीन से आयातित साइट्रिक एसिड में समान विनिर्देशन हैं।

किसी भी निर्यातक आयातक अथवा अन्य हितबद्ध पार्टी ने याचिकाकर्ता के दावे का खंडन नहीं किया है और इस प्रकार विशेषज्ञ के विचार और प्रयोगशाला विश्लेषण रिपोर्ट पर विश्वास करते हुए प्राधिकारी का मानना है कि याचिकाकर्ता द्वारा विनिर्मित साइट्रिक एसिड और चीन के निर्यातित साइट्रिक एसिड का एक दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया जा सकता है और इस प्रकार इन्हें तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापित किया जा सकता है और ये नियमों के अर्थों के भीतर समान वस्तुएं हैं।

### छ. घरेलू उद्योग

7. मैसर्स सितुर्जिया बायो केमिकल्स लि० मेवेली हाउस जे एन हेरेडियो मार्ग, बेलाई एस्टेट बंबई द्वारा घरेलू उद्योग की ओर से याचिका दायर की गई है। साइट्रिक एसिड के अन्य उत्पादक हैं मैसर्स साइट्रिक एसिड इंडिया लि० जो 1996-97 के दौरान बन्द रही है, मैसर्स भारत स्टार्च लि० जिसने वर्ष 1996-97 के दौरान उत्पादक शुरू किया है और उसने जांच शुरू होने के पश्चात् याचिका का समर्थन किया है। यह देखा गया है कि याचिकाकर्ता का उद्योग के कुल उत्पादन में लगभग 87% का हिस्सा था और इस प्रकार नियमानुसार याचिकाकर्ता के पास घरेलू उद्योग की ओर से याचिका दायर करने का आधार है।

### ज. पाटन

8. धारा 9 क (1)(ग) के अंतर्गत किसी वस्तु के बारे में सामान्य मूल्य का अर्थ है :—

1. व्यापार के सामान्य रूप से मिलती जुलती वस्तुओं का तुलनात्मक मूल्य जबकि यह निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए हो, जिसका निर्धारण उप धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार किया जाए; या

2. जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार के सामान्य रूप में मिलती जुलती वस्तुओं की कोई बिक्री न हो, या निर्यातक देश अथवा क्षेत्र के घरेलू बाजार में विशेष बाजार स्थिति या बिक्री की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्री से उचित तुलना नहीं की जा सकती हो, तब सामान्य मूल्य इनमें से कोई एक होगा—

(क) निर्यातक देश या क्षेत्र या किसी उपयुक्त तीसरे देश से निर्यात किए जाने पर मिलती जुलती वस्तुओं का तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य जिसका निर्धारण उप धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार किया जाएगा; या

(ख) प्रशासनिक लागतों, बिक्री लागतों और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित राशि जोड़ते हुए उद्गम वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत, जिसका निर्धारण उप धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार किया जाएगा;

बशर्ते कि ऐसे मामले में जहां वस्तु का आयात उद्गम वाले देश से भिन्न किसी अन्य देश से किया गया हो तथा जहां वस्तु को निर्यात वाले देश से केवल वाहनान्तरित किया गया है या निर्यात वाले देश में ऐसी वस्तु का उत्पाद नहीं किया जाता है या निर्यात वाले देश में कोई तुलनात्मक कीमत नहीं है तब सामान्य मूल्य का निर्धारण उद्गम वाले देश में इसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।

याचिकाकर्ता ने साइट्रिक एसिड संबंधी एन आर डी सी के तत्वावधान में चीन के एक शिष्टमंडल द्वारा उसे उपलब्ध कराई गई सूचना के आधार पर उत्पादन की आकलित लागत का अनुमान लगाया है। याचिकाकर्ता ने शकरकंद के स्टार्च से साइट्रिक एसिड के विनिर्माण के लिए रसायनों की खपत संबंधी मानदंडों के बारे में अपने उपाध्याय (तकनीकी) से एक तकनीकी टिप्पणी भी प्रस्तुत की है और पुष्टि की है कि याचिकाकर्ता के बजटीय मानदंड शकरकंद पर आधारित साइट्रिक एसिड के विनिर्माण के संबंध में लागू होंगे। मूल कच्ची सामग्री, ईंधन और बिजली की लागत हांग कांग स्थित याचिकाकर्ता के उच्च संपर्क से ली गई सूचना के आधार पर लगाई गयी है जो साइट्रिक एसिड का व्यापार करता है। अन्य कच्ची सामग्री के बारे में प्रयोग के मानदंड याचिकाकर्ता के चीनी संपर्क से प्राप्त सूचना और मानदंडों के आधार पर हैं। अन्य निश्चित लागत, वित्त लागत और मूल्य द्वारस चीन से सूचना ना मिलने पर याचिकाकर्ता द्वारा ऐसे खर्चों पर व्यय की गई राशि पर आधारित है।

प्राधिकारी का यह विचार है कि किसी भी चीनी निर्यातक ने प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है और सामान्य मूल्य, निर्यात मूल्य, डम्पिंग मार्जिन संबंधी सूचना प्रस्तुत नहीं की है। इस प्रकार प्राधिकारी ने उन्हें असहयोगी निर्यातक के रूप में समझा है और उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के आधार पर कार्यवाई की है।

याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि चीन एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है और इसके घरेलू बाजार में प्रचलित कीमतों के बारे में कोई सूचना प्राप्त करना न केवल कठिन है बल्कि भ्रामक भी है। याचिकाकर्ता द्वारा यह भी तर्क दिया गया है कि चीन की सरकार अत्यधिक रियायत का सहारा लेती है और इसकी बिक्री कीमतें उत्पादन लागत जैसे कारकों पर आधारित नहीं हैं। इस प्रकार याचिकाकर्ता विधि लागत के बारे में उपलब्ध साक्ष्य पर आधारित अपनी निर्मित उत्पादन लागत का दावा कर रहा है और निश्चित लागत जैसे अन्य दावे कर रहा है। ये दावे भारत में प्रचलित कारकों के आधार

पर हैं। इस आधार पर याचिकाकर्ता साइट्रिक एसिड की \* \* \* निर्मित उत्पादन लागत का दावा कर रहा है। तथापि, याचिकाकर्ता ने निर्मित उत्पादन लागत निकालने के लिए पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किए हैं इसलिए इसकी प्रामाणिकता की पुष्टि नहीं की जा सकती है। तथापि, न तो किसी इच्छुक पक्षों अर्थात् निर्यातक, आयात ने परिकलन की विधि का विरोध किया है और न ही लागत निकालने के प्रयुक्त वास्तविक आंकड़ों का विरोध किया है। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी को याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत की गई उपलब्ध सूचना पर निर्भर होना पड़ा है और तदनुसार निर्मित लागत निर्धारित करनी पड़ी है।

#### झ. निर्यात कीमत

9. डी जी सी आई एण्ड एस द्वारा संकलित आंकड़ों के अनुसार, पी ओ आई के दौरान यह देखा गया है कि साइट्रिक एसिड की औसत सी आई एफ कीमत ..... है। याचिकाकर्ता ..... समुद्री भाड़ा, ..... अंतर्देशीय भाड़ा ..... विशेष पैकेजिंग प्रभाओं और रख-रखाव, निकासी इत्यादि के कारण कीमत समायोजन का दावा कर रहा है। याचिकाकर्ता ने उपरोक्त दावे का आकलन अपने अनुभव और अनुमान के आधार पर लगाया है। उन्होंने अपने दावे के समर्थन में साक्ष्य/स्पष्ट साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है। तथापि, प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि किसी भी निर्यातक/आयातक ने उपरोक्त दावे का विरोध नहीं किया है और इस प्रकार प्राधिकारी याचिकाकर्ता द्वारा यथाप्रस्तुत आंकड़ों को स्वीकार करने तथा डम्पिंग का निर्धारण करने के लिए बाध्य है। भारत औसत निर्यात कीमत (दोनों कारखानों द्वारा स्तर पर) जिसे निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में दर्शाया गया है, को सामान्य कीमत के साथ तुलना करने पर 81.25% की डम्पिंग मार्जिन का पता चलता है।

#### ज. क्षति

10. उपरोक्त नियम 11, अनुबंध-11 के तहत जब क्षति के बारे में किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जाता है तो ऐसे निष्कर्ष निकालते समय घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण, सभी संगत तथ्यों को हिसाब में लिया जाता है जिसमें डम्प किए गए आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए बाजार में कीमतों पर उनका प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों का परवर्ती प्रभाव शामिल है। डम्प किए गए आयातों की कीमतों पर पड़ने वाले प्रभाव पर विचार करते हुए इस तथ्य की जांच की जानी आवश्यक समझी जाती है कि क्या भारत में समान वस्तु के कीमत की तुलना में डम्प किए गए आयातों की वजह से कीमतों में पर्याप्त गिरावट रही है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा पर्याप्त मात्रा में कीमतों में गिरावट लाना है अथवा कीमतों में वृद्धि होने से रोकना है जिससे अन्यथा पर्याप्त मात्रा में वृद्धि हो गयी होती।

उपरोक्त नियम 11 के अंतर्गत अनुबंध 11(iii) में यह भी प्रावधान है कि ऐसे मामले में जहाँ एक से अधिक देशों से होने वाले किसी उत्पाद के आयात के साथ ही साथ घाटनरोधी जांच की जा रही हो तो वहाँ प्राधिकारी ऐसे आयातों का संचयीरूप से मूल्यांकन करेगा, और जब यह निर्धारित हो जाए कि दो देशों से आयातों के संबंध में स्थापित डम्पिंग मार्जिन प्रतिशत निर्यात के रूप में दो प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से होने वाले आयात की मात्रा समान वस्तु के आयात का तीन प्रतिशत है अथवा जहाँ अलग-अलग देशों से किया गया निर्यात तीन प्रतिशत से कम है, वहाँ संचयी आयात समान वस्तुओं के आयात का मात्र प्रतिशत से अधिक बनाता है और आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तुओं के बीच प्रतिस्पर्धा के आलोक में उचित है।

प्राधिकारी ने नोट किया कि सम्बन्धित देश से डम्पिंग मार्जिन तथा आयातों की मात्रा उपयुक्त निर्धारित माप से कहीं अधिक है। आयातों के प्रभावों का संचयी मूल्यांकन उचित है क्योंकि सम्बन्धित देश से निर्यात कीमतें भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा दी गई कीमतों के सीधे ही प्रतियोगिता करती हैं।

भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच के लिए प्राधिकारी ने उद्योग की स्थिति जैसे आयात उत्पादन की मात्रा, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक मार्किट, बाजार शेयर, लाभप्रदता, निखल बिक्री प्राप्ति, डम्पिंग की मात्रा, तथा मार्जिन आदि पर उक्त नियमों के अनुबंध 2 (iv) के अनुसार विचार किया।

#### आयातों की मात्रा

11. देश में साइट्रिक एसिड के कुल आयात 1994-95, 95-96 और जांच की अवधि में क्रमशः 3256 मी. टन, 2250 मी. टन तथा 5350 मी. टन (वार्षिक आधार पर) थे। अतः सम्पूर्ण अर्थों में कुल आयातों में उध्व की प्रवृत्ति दिखाई देती है। यद्यपि 1994-95 की तुलना में 1995-96 में आयातों में कमी आई है परन्तु 1995-96 की तुलना में जांच अवधि (पी.ओ.आई.) में 138% (वार्षिक आधार पर) की वृद्धि पाई गई। यह भी पाया गया कि अप्रैल 1997 में जुलाई 1997 में 2997 मी. टन के आयात हुए जबकि 1996-97 में 3830 मी. टन के आयात हुए। इस प्रकार, पी.ओ.आई. के बाद की अवधि में पी.ओ.आई. की पूर्व अवधि की तुलना में तेजी से वृद्धि हुई है। यह भी पाया गया कि आयातों की अधिकांश मात्रा चीनी मूल की है अतः ये 1994-95, 1995-96 तथा पी.ओ.आई. में क्रमशः 99%, 98% तथा 85% थे। अतः यह पाया गया कि पी ओ आई की अवधि के दौरान सम्पूर्ण अर्थों में आयातों में काफी वृद्धि हुई है और यह वृद्धि अप्रैल 1997 से जुलाई 1997 में बहुत ही महत्वपूर्ण रही है।

#### उत्पादन तथा क्षमता उपयोग

12. यह पाया गया है कि याचिकाकर्ता की संस्थापित क्षमता 1994-95 से आगे 6250 मी. टन रही और याचिकाकर्ता की क्षमता में कोई परिवर्तन नहीं आया है। मैमर्स भारत स्टार्च ने जांच की अवधि के दौरान बहुत ही कम पैमाने पर उत्पादन शुरू किया था। याचिकाकर्ता का उत्पादन जांच की अवधि में (वार्षिक आधार पर) 6003 मी. टन, 6074 मी. टन तथा 6120 मी. टन था। इस प्रकार क्षमता उपयोग वर्ष 1994-95 में 96%, 95-96 में 97% तथा जांच अवधि में 98% था (वार्षिक आधार पर) और इस प्रकार उत्पादन तथा क्षमता उपयोग वर्षों से स्थिर रहा।

**बिक्री**

13. याचिकाकर्ता की देशीय बिक्री 1994-95, 1995-96 तथा जांच की अवधि (वार्षिक आधार पर) में क्रमशः 5397 मी. टन, 7401 मी. टन, तथा 5815 मी. टन रही है। इस प्रकार 94-95 की तुलना में 95-96 में 37.13% की वृद्धि रही और जांच अवधि में 21.5% की गिरावट (वार्षिक आधार पर) रही। 1994-95 की तुलना में 1995-96 में बिक्री में वृद्धि का प्रथम दृष्टया कारण 1994-95 के दौरान संचयित स्टॉक को समाप्त करना था। तथापि, जांच की अवधि के दौरान उत्पादन 6120 मी. टन था तथा बिक्री जांच की अवधि के दौरान वार्षिक आधार था 5815 मी. टन थी। यह भी पाया गया कि अप्रैल, 1997 से जुलाई 1997 के दौरान उत्पादन 2028 मी. टन था जबकि बिक्री 1524 मी. टन ही थी। याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि वे सामान को बेच नहीं सके और निर्धारित लागत के कुछेक हिस्से को वसूल करने के लिए पूरी क्षमता से संयंत्र का इस्तेमाल कर रहे हैं। अन्यथा हानि में और भी वृद्धि हो सकती थी और इस नीति के कारण उनके पास अनधिक स्टॉक की बड़ी मात्रा इकट्ठी हो गई है। यह भी पाया गया है कि जुलाई, 1997 में बिक्री में 240 मी. टन की कमी हुई जो उत्पादन का लगभग 50% है। बिक्री में यह कमी ग्राहकों को छूट देने के बावजूद हुई थी।

**स्टॉक**

14. यह भी पाया गया कि वस्तुओं का क्लोजिंग स्टॉक 1994-95, 95-96 तथा 31-7-97 तक क्रमशः 1574 मी. टन, 219 मी. टन तथा 628 मी. टन था। अतः स्टॉक में 31-6-96 की तुलना में 31-7-97 में स्टॉक में वृद्धि हुई है। याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि स्टॉक में वृद्धि इसलिए हुई कि चीन से हुई डंपिंग के कारण वे बिक्री नहीं कर सके।

**बाजार शेयर**

15. यह पाया गया कि चीन के आयातों में सम्पूर्ण अर्थों में वृद्धि हो रही है और उनके बाजार शेयर में वृद्धि हुई है। इससे याचिकाकर्ता की कुल मांग में बिक्री के शेयर भी प्रभावित हो रहे हैं। यह भी पाया गया कि याचिकाकर्ता का शेयर 1994-95, 95-96, तथा जांच की अवधि (वार्षिक आधार पर) में क्रमशः 62%, 77% तथा 52% था। इस प्रकार कुल मांग में याचिकाकर्ता के बाजार शेयर में हानि हो रही है।

**उत्पादन की लागत, लाभ का क्षरण तथा कीमत में कटौती**

16. याचिकाकर्ता ने बताया है कि उत्पादन की लागत में वृद्धि पॉवर टैरिफ तथा सीरे की कीमतों में वृद्धि के कारण हुई है जो साइट्रिक एसिड के उत्पादन के लिए कच्ची सामग्री है। यह नोट किया गया कि जहां उत्पादन की लागत में इन कारणों से वृद्धि हुई है, याचिकाकर्ता चीन से डंपिंग के कारण कुल लागत को वसूल नहीं कर सका क्योंकि घरेलू उद्योग अपने ग्राहकों को छूट दे रहा है। इस प्रकार अभी लाभ प्रदता भी प्रभावित हुई है। याचिकाकर्ता ने बताया कि उन्हें 1995-96 में ..... लाख रु. 1996-97 में ..... लाख रु. का लाभ हुआ और अप्रैल-जुलाई, 1997 में उन्हें हानि हुई है। याचिकाकर्ता ने दावा किया कि वे उचित बिक्री कीमत प्राप्त नहीं कर सके जिससे कि वे उत्पादन की पूरी लागत तथा उचित लाभ अर्जित कर सकते हैं। याचिकाकर्ता के विभिन्न डीलर बाजार में उपलब्ध आयातित माल की कम कीमत के आधार पर छूट की मांग कर रहे थे और उम्मेद होता है कि चीन के विनिर्माण द्वारा कीमत में कमी की गई थी।

**घरेलू उद्योग की वृद्धि में गिरावट**

17. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि डंपिंग के कारण उन्हें फैक्टरी को बंद करना पड़ेगा जिसके कारण अनेक कामगारों को बेरोजगार होना पड़ेगा इससे देश में साइट्रिक एसिड उद्योग की वृद्धि प्रभावित होगी। यह भी दावा किया गया है कि याचिकाकर्ता पर अन्य कई अनुपंगी इकाईयां भी निर्भर करती हैं और यदि याचिकाकर्ता अपने कार्य को बंद करता है तो इससे वे इकाईयां भी प्रभावित होंगी। याचिकाकर्ता ने यह भी सूचित किया है कि सामग्री की खरीद में मंदी के कारण उन्हें 16-12-97 को फैक्टरी को बंद करने के लिए बाध्य होना पड़ा और कामगारों को वापस भेज दिया गया। यह भी कहा गया कि कर्मचारियों की संख्या 1-4-96 में 254 की जो 1-4-97 में घटकर 243 रह गई।

**क्षति पर निष्कर्ष**

18. अतः प्राधिकारी ने पाया है कि;

- \* चीन से आयातों में जांच की अवधि के दौरान तेजी से वृद्धि हुई।
- \* उत्पादन तथा क्षमता उपयोग में वरों से वही स्थिति रही है।
- \* बिक्री में कमी हुई है जिसके फलस्वरूप क्लोजिंग स्टॉक में वृद्धि हुई है।
- \* आयातित वस्तुओं के बाजार शेयर में वृद्धि हुई है जबकि कुल मांग में याचिकाकर्ता का बाजार शेयर कम हुआ है।
- \* उत्पादन की लागत में जांच की अवधि के दौरान वृद्धि हुई परन्तु जांच के बाद की अवधि में प्राप्ति में कमी आई जिससे याचिकाकर्ता को जांच के बाद की अवधि में हानियां हुई। यद्यपि पहली अवधि में उन्होंने लाभ अर्जित किया था।

उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि घरेलू उद्योग को चीन मूल के साइट्रिक एसिड के आयातों से वास्तविक क्षति हुई है।

## ट. कारणात्मक

19. यह स्थापित करने के लिए कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति सम्बद्ध देश से आयातों द्वारा हुई, प्राधिकारी ने पाया कि चीन से आयातों के बाजार शेयर में वृद्धि के फलस्वरूप याचिकाकर्ता के बाजार शेयर में कमी हुई है। डम्प की गई सामग्री ने घरेलू उद्योग को अधिक स्टॉक एकत्र करने के लिए विवश किया। चीन साइट्रिक एसिड के निर्यातों ने घरेलू उद्योग को अपनी किमतों को अलाभकर स्तरों पर रखने के लिए बाध्य किया तथा उचित कीमत को वसूल करने से रोका जिसके फलस्वरूप हानियाँ/लाभों में कमी हुई।

## ठ. भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मामले

20. पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य सामान्यतः उस पाटन को समाप्त करना है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति पहुँच रही है तथा भारतीय बाजार में एक ऐसी खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बहाल करना है जो देश के आमहित में हो।

यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से संबद्ध वस्तुओं के इस्तेमाल से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामस्वरूप इसका इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मक पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है। परन्तु, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी विशेषकर, यदि पाटनरोधी शुल्क का उद्ग्रहण घरेलू उद्योग को हुयी क्षति की पूर्ति के लिए आवश्यक धनराशि तक सीमित रखा जाता है। इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन संबंधी कार्यों द्वारा अनुचित ढंग से उठाए गए लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग की गिरावट रुकेगी तथा साइट्रिक एसिड के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प की उपलब्धता को बनाए रखने में मदद मिलेगी। पाटनरोधी उपायों को लागू करने से संबद्ध देशों से होने वाले आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे और इस प्रकार उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। घरेलू उद्योग को हुयी क्षति को दूर करने के लिए आवश्यक पाटनरोधी शुल्क की मात्रा निर्धारण के लिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के लिए क्षमता-उपयोग के ईष्टतम स्तर पर उत्पादन की ईष्टतम लागत पर विचार करके घरेलू उद्योग के लिए भारत में साइट्रिक एसिड की उचित बिक्री कीमत पर विश्वास किया।

## ड. पहुँच मूल्य

21. चीन जनवादी गणराज्य से आयातों का पहुँच मूल्य, सीमा-शुल्कों के प्रचलित स्तर और एक प्रतिशत उतराई तथा दो प्रतिशत हैण्डलिंग प्रभारों को जोड़ने के बाद चीन जनवादी गणराज्य से साइट्रिक एसिड की भारत औसत निर्यात कीमत के आधार पर निर्धारित किया गया है।

## ड. निष्कर्ष :—

22. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी निम्नलिखित निष्कर्ष निकालते हैं कि :—

- \* चीन जनवादी गणराज्य के मूल के या वहाँ से निर्यातित साइट्रिक एसिड भारत को सामान्य से कम मूल्य पर निर्यात किया गया है जिसके कारण पाटन हुआ है;
- \* घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है;
- \* संबद्ध देश से आयातों द्वारा संचयी रूप से क्षति हुई है।

23. जाँच के लंबित रहने तक संबद्ध देश के मूल के या वहाँ से निर्यातित साइट्रिक एसिड के सभी आयातों पर अंतिम निर्धारण के लंबित रहने तक अनन्तिम रूप से पाटनरोधी शुल्क लगाया जाना आवश्यक समझा गया है।

24. यह विचार किया गया था कि क्या पाटन मार्जिन से कम शुल्क लगाना क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा। इस उद्देश्य के लिए आयातों की पहुँच कीमत की तुलना घरेलू उद्योग की उचित बिक्री कीमत से की गई थी जो कि जाँच अवधि के लिए निर्धारित की गई थी। जहाँ-कहीं अंतर पाटन मार्जिन से कम था, वहाँ उक्त पाटन मार्जिन से कम शुल्क लगाने की सिफारिश की गई है।

25. तदनुसार, प्राधिकारी अनन्तिम प्रतिपाटन शुल्क की सिफारिश करते हैं। प्रतिपाटन-शुल्क 58925 रु. प्रति मी. टन तथा आयात की प्रति मी. टन पहुँच कीमत के बीच का अंतर होगा जो इस संबंध में अंतिम निर्धारण तक सीमाशुल्क टैरिफ के अध्याय 2918.14 के अंतर्गत आने वाले चीन जनवादी गणराज्य मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित साइट्रिक एसिड के सभी आयातों पर इस बारे में केन्द्रीय द्वारा सरकार जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से लागू होगा।

26. इस प्रयोजन के लिए आयातों की पहुँच कीमत वह शुल्क निर्धारण योग्य कीमत होगी, जैसा कि सीमाशुल्क कार्यालय द्वारा सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अन्तर्गत निर्धारित की गयी है और सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3 और 3 क, 8 ख और 9, 9 क को छोड़कर सभी शुल्क इसमें शामिल होंगे।

27. संबद्ध ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ताओं, हितबद्ध पार्टियों को प्राधिकारी द्वारा अलग से लिखा जा रहा है, जो इस पत्र को भेजे जाने की तिथि से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं। कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इन जाँच परिणामों के प्रकाशन की तिथि से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकती है।

रति चिनय झा, निर्दिष्ट प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE****NOTIFICATION****PRELIMINARY FINDINGS**

New Delhi, the 20th October, 1998

**Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of Citric Acid from China PR  
—Preliminary Findings.**

**29/1/97 ADD:** Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-dumping duty on dumped articles and for Determination of injury) Rules, 1995, thereof;

**A. PROCEDURE**

1. The procedure described below has been followed with regard to the investigation.
  - i. The Designated Authority (hereinafter also referred to as Authority), under the above rules, received a written application from Citurgia Bio-Chemicals Ltd., Neverite House, JN Heredia Marg, Ballard Estate Bombay (referred to as Citurgia hereinafter) on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Citric Acid originating in or exported from China PR.
  - ii. Preliminary scrutiny of the application filed by petitioner revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the petitioner. The petition was therefore, considered as properly documented;
  - iii. The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioner decided to initiate the investigations against imports of Citric Acid from China. The Authority notified the Embassy of China about the receipt of dumping allegation before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule 5(5) of the Rules;
  - iv. The Authority issued a public notice dated 18<sup>th</sup> March, 1998 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti dumping investigations concerning imports of Citric Acid classified under custom heading 2918.14 of Schedule 1 of the custom Tariff Act, 1975 originating in or exported from China (referred to as the subject country hereinafter);
  - v. The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters (whose details were made available by the petitioner) and industry associations and gave them an opportunity to make their views known in writing in accordance with the rule 6(2);
  - vi. The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known importers (whose details were made available by the petitioner) of Citric Acid in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of the letter:



- vii. Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) to arrange details of imports of Citric Acid made in India during the past three years, including the period of investigation. No information was, however, received from CBEC;
- viii. The Authority provided a copy of the petition to the known exporters and the Embassy of the subject country in accordance with rules 6(3) supra. A copy of the petition was also provided to the other interested parties, wherever requested.
- ix. The Authority sent a questionnaire to elicit relevant information, to the following known exporters, in accordance with the rule 6(4);
  1. China Shanxi Prosperous Chem.Ind.Group Ltd.,294, Jiefang Road, Yucheng City,Shanxi Province, China.
  2. Chonqing Daxin Pharma Co.Ltd.,Chunangzao Road, Dongyan Town, Bei Bei District, China.
  3. Lianyungang Chem., Medicines & Health Prof., 40,Hailian East Road, Lianyungang, Jiangsu China.
  4. Nantong Citric Acid Factory, 30,Henghe Rkoad, Nantong Jiangsu China.
  5. No.404 Factory of China Nuclear Industry Gen.Corp., P.O.Box 508-A22,\, Lanzhou City, Gansu Province, China.
  6. Shanxi International Countertrade Corp., 110, North Tsoynan Road, Taiyuan, Shanxi, China.
  7. Zhengzhou Baiwen Co.Ltd., No.2, Nanyang Road, Zhengzhou 450053, China
  8. Zibo Hualong Industrial General Corp, Mengji Village, Zichuan District, Zibo Shandong, China.

None of the exporter responded to the questionnaire.

- (x) The Embassy of the subject country in New Delhi was informed about the initiation of the investigation in accordance with rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the exporters was also sent to the Embassy, alongwith a list of known exporters/producers.
- (xi) A questionnaire was sent to the following known importers of Citric Acid for necessary information in accordance with rule 6(4);
  - 1) Govindram Chellaram Gaumukh Bldg. Yusuf Mehra Ali Road, Opp.Masjid Station Mumbai 400 003.
  - 2) C.J.Shah & Co. Mahavir Chambers, Samuel Street, Mumbai 400 003.
  - 3) Ramniklal Gosalia, Parshwa Chambers, II Floor, ISSAJI Street, Mumbai 400023.
  - 4) HMG Inds.Ltd., Hari Chambers, S. Bhagatsing Road-2, Mumbai 400 023.
  - 5) Amijal Chemicals, 313/5 GIDC Ankleshwar, Gujarat.
  - 6) Iris Laboratories (India) ,Plot No.379,Phase II, GIDC Vatwa, Ahmedabad 382245
  - 7) Gayatri Labs.Pvt.Ltd.,E-64, Road No.7, MIDC, Tarapur, Boisar Thane Dist.401502.

Response to the questionnaire was filed by M/s.Iris Laboratories (India), Ahmedabad.

- (ix) Additional information regarding injury was sought from the petitioners, which was also furnished;
- (x) The Authority conducted on-the-spot investigation at the premises of the petitioner to the extent considered necessary;

- (xi) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;
- (xii) Cost investigations were also conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the petitioners also as to ascertain if anti-dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry;
- (xiii) \*\*\* in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;
- (xiv) Investigation was carried out for the period starting from 1<sup>st</sup> April, 1996 to 31<sup>st</sup> July, 1997

B. PETITIONERS VIEW :

- 2. The petitioner has raised the following major issues in its petition and subsequent submission.
  - (i) Petitioner claims that they are the only manufacturers to make Citric Acid out of Mollasses in India. Their product is of international quality and is well accepted by consumers.
  - (ii) With the reduction in custom duty, the Chinese manufacturers are reducing their prices and flooding the domestic market. This has constrained the petitioner to reduce their selling prices and they are not able to recover their cost of production. The dumping of Chinese production is resulting into lower sale of Citric Acid, accumulation of stock and incurring of losses. It is further stated that if such situation continues, they will be constrained to shut down their operation.
  - (iii) The Chinese have further dropped the price of their product in the post period of investigation and thus forcing to reduce the domestic price in India further. The petitioner has further stated that they can not compete against the dumping at throwaway prices. The volume of imports is increasing and in April 1997-July 1997, it is about 60% of the demand in the country.

C. VIEW OF IMPORTERS, EXPORTERS & OTHER INTERESTED PARTIES.

- 3. The views expressed by the exporters, importers and other interested parties are briefly as under :
  - i. None of the exporters named in the petition has responded and thus have not co-operated in the investigation.
  - ii. M/s. Irish Laboratories (India) Ahmedabad, an importer of the subject goods has responded and their views are as under :-
    - a. the statement filed by the petitioner that they account for around 95% of the production are totally untrue and baseless. Another manufacturer M/s. Bharat Starch Industries Ltd., is existing with an annual capacity of 20000 MT.
    - b. The claim of the petitioner that their product and product imported are consumed interchangeably is not true. Citric acid imported from China is transparent and uniform as per specification, whereas the petitioner's product is of less percentage than standard, dull and dumps and not having stringent specifications, even varying in the same batch.
    - c. It should have been feasible for the petitioner to obtain normal value as their plant is nearly 20 years old and in past they had collaboration with a world

known company. The petitioner had accumulated huge profits and they should have lower the cost of production by constant R & D efforts.

- d. The export price offered and price of citric acid produced by M/s. Bharat Starch who is another producer of citric acid is below the price offered by petitioner. The export price of India has always been the same as normal price in that country throughout last couple of years and there is no remarkable change.
- e. The claim of the domestic industry that they have suffered material injury is not proper and correct. When there were no imports, the domestic industry used to sell at exorbitant prices.
- f. Petitioner has always moved their price close to the import price and at every chance they had increased their prices and that too without any prior notice and also on pending orders.
- g. If there would not have been imports there would have been total non-availability of products as the petitioner has not sufficient production to meet the demands.
- h. During all the years, the petitioner's have never thought of increasing their production capacity, running the plant most inefficiently, any R&D work and think of supplying the material in the domestic market at an international price instead of thinking to stop imports and get their own price.

#### D. EXAMINATION OF THE ISSUE RAISED:

4. The submission made by the exporter, importer, petitioner and other interested parties, wherever submitted have been considered and have been dealt at appropriate places in this notification.

#### E. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

5. The product involved in the petition is Citric Acid originating in or exported from China. The product is classified under Custom Tariff heading 2918.14. The classification is, however indicative only and in no way binding on the present investigations. The petitioner has claimed that the product is under OGL category as per import policy and is mainly used as a preservative in food soft drinks, confectionery, drugs, in Textile Industry etc. and have other industrial uses like in boiler cleaning etc. All the Citric Acid are Mono Carboxylic acid and serve the same general purpose of acidulation, preservatives, buffering agent and sequestering agent. Citric acid is usually produced in crystal form.

#### F. LIKE ARTICLE

6. Petitioner has claimed that citric acid manufactured by the domestic industry and citric acid being dumped by China is consumed interchangeably though the citric acid produced by the petitioner and citric acid manufactured by Chinese exporter involve different raw material. But the process itself is same i.e. fermentation, the equipments are same and do not involve a special or different process. It is observed that petitioner is producing citric acid from Molasses whereas Chinese are using sweet potato starch as their raw material for producing citric acid. It is also stated that citric acid can be produced from calcium citrate base.

Petitioner has claimed that citric acid manufactured by them and citric acid manufactured by Chinese exporters meet the same norms and comply with British Pharmacopia specification and can be used interchangeably. They have submitted a certificate in this regard from an expert who has observed that both material comply fully with the Pharmacopia specification and can be used interchangeably in the preparation of medicinal and food products or for any other purpose required by customers. The petitioner has also submitted analysis report from a laboratory confirming that citric acid manufactured by the petitioner and citric acid imported from China have common specification.

None of the exporter, importer or other interested party has disputed to the claim of the petitioner and thus relying on the opinion of expert and laboratory analysis report, the Authority holds that citric acid manufactured by the petitioner and citric acid exported from China can be used interchangeably and thus can be substituted technically and commercially and they are "like articles" within the meaning of the rules.

G. DOMESTIC INDUSTRY

7. The petition has been filed by M/s Citurgia Bio-chemicals Ltd. Nevillie House, JN Heredia Marg, Ballard Estate, Bombay, on behalf of the domestic Industry. The other producers of citric acid are M/s. Citric India Ltd., has closed down during 1996-97. M/s. Bharat Starch Ltd., who have commenced the production during 1996-97 and has supported the petition after the initiation of investigation. It is observed that the petitioner share in total production of industry was about 87% and thus the petitioner has a standing to file the petition on behalf of the domestic industry under the rules.

H. DUMPING

8. Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:
- (i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
  - (ii) When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either-
    - (a) Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section(6); or
    - (b) the cost of production of the said article in the country of origin alongwith reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section(6);

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

The petitioner has estimated the constructed cost of production on the basis of information made available to them by a delegation from China under the auspices of NRDC on Citric Acid. The petitioner has also submitted a technical note from their Vice-President (Technical) regarding the consumption norms of chemicals for the manufacture of Citric Acid

from sweet potato starch and confirming that the budgeted norms of petitioner will hold good for the manufacture of citric acid based on sweet potato. The cost of basic raw material, fuel and power is taken on the basis of information taken by the petitioner's contact in Hong Kong who are in citric acid business. Regarding other raw materials, the usage norms are based on the norms and information received by petitioner's contact in China. The other fixed cost, finance cost and depreciation are based upon the amount spent by the petitioners on such expenses in the absence of information from China.

It is observed by the Authority that none of Chinese exporters have responded to the questionnaire and submitted information relating to normal value, export price, dumping margin and thus the Authority has considered them non-cooperative exporters and proceeded on best available information.

Petitioner has claimed that China is a non market economy and to obtain any information about the prices prevailing in their domestic market is not only difficult but also misleading. It is also argued by petitioner that Government of China resorts to heavy subsidies and their selling prices are not based on factors like cost of production. Thus the petitioner is claiming their constructed cost of production based on evidence available with regard to variable cost and other claims like fixed cost, and it is on the basis of factors prevailing in India. Based on this, the petitioner is claiming the constructed cost of production of citric acid of \*\*\*. However, the petitioner has not furnished sufficient evidence to arrive at the constructed cost of production and hence its authenticity cannot be confirmed. However, neither any of the interested parties viz. Exporter, Importer has contested the method of calculation, nor the factual data used in arriving at the cost. In the circumstances, Authority is constrained to rely on the available information submitted by petitioner and determine the constructed cost accordingly.

#### I. EXPORT PRICE

9. During the POI, as per the figures complied by DGCI&S, it is observed that average CIF price of citric acid is \*\*\*. The petitioner is claiming price adjustment on account of ocean freight \*\*\*, inland freight \*\*\*, special packing charges \*\*\* and handling, clearance etc. The petitioner has estimated the above claims on the basis of their experience and approximation. They have not submitted evidence/clear evidence in support of their claims. However, the Authority notes that none of the exporter/importer has contested the above claim, and thus the Authority is constrained to accept data as submitted by the petitioner and determine the dumping. The comparison of normal value with weighted average export price (both ex-factory levels) indicated as percentage of export price, shows a dumping margin of 81.25%.

#### J. INJURY

10. Under Rule 11 Supra, Annexure -II, when a finding on injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles..” In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

Annexure II(iii) under rule 11 supra further provides that in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to Anti Dumping investigation, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, only when it determines that the margin of dumping established in relation to the imports from two countries is more than

two per cent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three per cent of the imports of the like article or where the export of the individual countries less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from subject country are more than the limits prescribed above. Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate since the export prices from the subject country were directly competing with the prices offered by the domestic industry in the Indian market.

For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on the state of the industry such as quantum of Imports production, capacity utilisation, sales quantum, stock, Market Share, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II (iv) of the rules supra.

#### QUANTUM OF IMPORTS

11. The total imports of citric acid in the country was 3256 MT , 2250 MT and 5350 MT (on annualised basis) in 1994-95, 95-96 and in the period of investigation. Thus there is an upward trend in the total imports in absolute terms. Though imports have gone down in 1995-96 over 94-95, but there is a sharp increase of 138% in POI (on annualised basis) over 1995-96. It is also observed that the imports in April 1997 to July 1997 was 2997 MT as compared to 3830 MT in 1996-97. Thus there is a sharp increase in the later part of POI as compared to earlier part of POI. It is also observed that majority of imports are of Chinese origin and it was 99%, 98% and 85% in 1994-95, 1995-96 and in POI respectively. Thus it is observed that imports have increased sharply in absolute terms during the POI and the increase were predominant from April 1997 to July, 1997.

#### PRODUCTION AND CAPACITY UTILISATION

12. It is observed that the installed capacity of the petitioner has been 6250 MT PA from 1994-95 onward and there is no change in the capacity of the petitioner. M/s. Bharat Starch has commenced the production in a small way during the POI. The production of petitioner was 6003 MT, 6074 MT and 6120 MT in POI (on annualised basis). Thus the capacity utilisation was 96% in 1994-95, 97% in 95-96 and 98% in POI (on annualised basis) and thus the production and capacity utilisation is stable over the years.

#### SALES

13. The indigenous sales of the petitioner has been 5397 MT, 7401 MT and 5815 MT in 1994-95, 95-96 and in POI (on annualised basis). Thus there was increase of 37.13% in 95-96 over 94-95 and a decrease of 21.5% in POI (on annualised basis). The prima facie reason of increase in sale in 1995-96 over 94-95 was, the liquidation of stocks accumulated during 94-95. However, the production during POI (on annualised basis) was 6120 MT and sales were 5815 during POI (on annualised basis). It is also observed that during April 1997 to July 1997, the production was 2028 MT whereas sales were 1524 MT. The petitioner have claimed that they are not able to sell the material and using the plant to full capacity to recover part of the fixed cost or else the losses would aggravate and because of this policy, they have to carry huge inventory of unsold stocks. It is also observed that in July 1997, the sales have decreased to 240 tonnes, which are about 50% of the production. The decrease in sales is in spite of discounts being offered to customers.

STOCKS

14. It is observed that the closing stock of goods were 1574 MT, 219 MT and 628 on 1994-95, 95-96 and as on 31.7.97. Thus there is an increase in stocks as on 31.7.97 as compared to 31.3.1996. The petitioner has claimed that the stocks have increased due to their inability to sell due to Chinese dumping.

MARKET SHARE

15. It is observed that the Chinese imports are rising in absolute terms and their market share is also rising. This is affecting the petitioner's share of sales in total demand. It is observed that petitioner share was 62%, 77% and 52% in 94-95, 95-96 and in POI (on annualised basis). Thus, the petitioner is losing its market share in the total demand.

COST OF PRODUCTION, EROSION OF PROFITS AND PRICE UNDERCUTTING

16. The petitioner has stated that cost of production has gone up on account of increasing power tariff and increase in molasses price, which is a raw material in the production of citric acid. It is noted that whereas the cost of production is rising on account of these, the petitioner is unable to realise the total cost due to Chinese dumping, as domestic industry is offering discounts to its consumers. Thus their profitability is affected. Petitioners have stated that they have made profit of Rs.\*\*\* lacs in 1995-96, Rs.\*\*\* in 1996-97 and April-July 1997, they have incurred losses. The petitioner has claimed that they are not been able to charge fair selling price which permits recovery of full cost of production and earn a reasonable profit. Various dealers of the petitioner have demanded discounts on the basis of lower prices at which imported goods are available in the market and this proves the price undercutting resorted to by Chinese manufacturer.

RETARDATION OF GROWTH OF DOMESTIC INDUSTRY

17. The petitioner claims that due to dumping, they will be constrained to close the factory, which in turn will lead to several workers becoming jobless, and this would affect the growth of citric acid industry in the country. It is also claimed that there are a lot of other ancillary units depending on petitioner and these industries will also be affected if the petitioner shut down their operations. Petitioner has also informed that they were forced to close the factory on 16.12.97 due to poor offtake of material and they have laid off the workers. It is also stated that number of employees have gone down for 254 as on 1.4.96 to 243 as on 1.4.97.

CONCLUSION ON INJURY

18. The Authority thus observe that:
- The imports from China have increased sharply during the period of investigations.
  - The production and Capacity utilisation has been status quo over the years.
  - There is a decrease in sales and consequently increase in closing stock.
  - The market share of imported goods has gone up whereas the share of petitioner in total demand has come down.
  - The cost of production have gone up, during the period of investigation but the realisation have gone down in the later part of the POI and thus the petitioner has suffered losses in the later part of POI. Though in the earlier part, they have earned profit.
  - Imports from subject country resulted in price under cutting in Indian market;

The Authority, after considering the above, concludes that domestic industry has suffered material injury from the imports of citric acid originating from China.

**K      CAUSAL LINK**

19. In establishing that the material injury to the domestic industry has been caused by the imports from the subject country, the authority holds an increase in market share of imports from China resulted in decline in the market share of petitioner. The dumped material forced the domestic industry to hold higher stocks. The export of citric acid from China force the domestic industry to keep its prices to unremunerative levels and prevented it to recover its fair price resulting in losses/ decrease in profits.

**L.      INDIAN INDUSTRY'S INTEREST AND OTHER ISSUES**

20. The purpose of anti dumping duties, in general, is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

It is recognised that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures, particularly if the levy of the anti dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of citric acid. Imposition of anti dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

To ascertain the extent of Anti-dumping duty necessary to remove the injury to the domestic industry, the Authority relied upon reasonable selling price of Citric Acid in India for the domestic industry, by considering the optimum cost of production at optimum level of capacity utilisation for the domestic industry.

**M.      LANDED VALUE**

21. The landed value of imports from China PR have been determined on the basis of weighted average export price of citric acid from China PR, after adding the prevailing level of customs duties and one percent landing and two percent handling charges.

**N.      CONCLUSIONS:**

22. The Authority, after considering the foregoing, concludes that:
- Citric acid originating in or exported from China PR has been exported to India below normal value resulting in dumping;
  - The domestic industry has suffered material injury.
  - The injury has been caused cumulatively by the imports from the subject country.
23. It is considered necessary to impose anti-dumping duty, provisionally, pending final determination, on all imports of citric acid originating in or exported from the subject country, pending investigations.
24. It was considered whether a duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove the injury. Landed prices of the imports, for the purpose, were compared with the fair selling price of the domestic industry, determined for the period of investigation. Wherever the difference was less than the dumping margin, a duty lower than the dumping margin is recommended.



25. Accordingly, the Authority recommends that provisional anti dumping duty. The Anti Dumping Duty shall be the difference between Rs. 58,925 per MT and the landed price of imports per MT, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of citric acid originating in or exported from China PR falling under Chapter 2918.14 of the Customs Tariff, pending final determination.
26. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Section 3, 3A, 8B and 9, 9A of the Customs Tariff Act, 1975.
27. Exporters, importers, petitioners and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of the dispatch of the letter. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings.

RATHI VINAY JHA, Designated Authority

